राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 1018

ढुंढुम

भोकाल

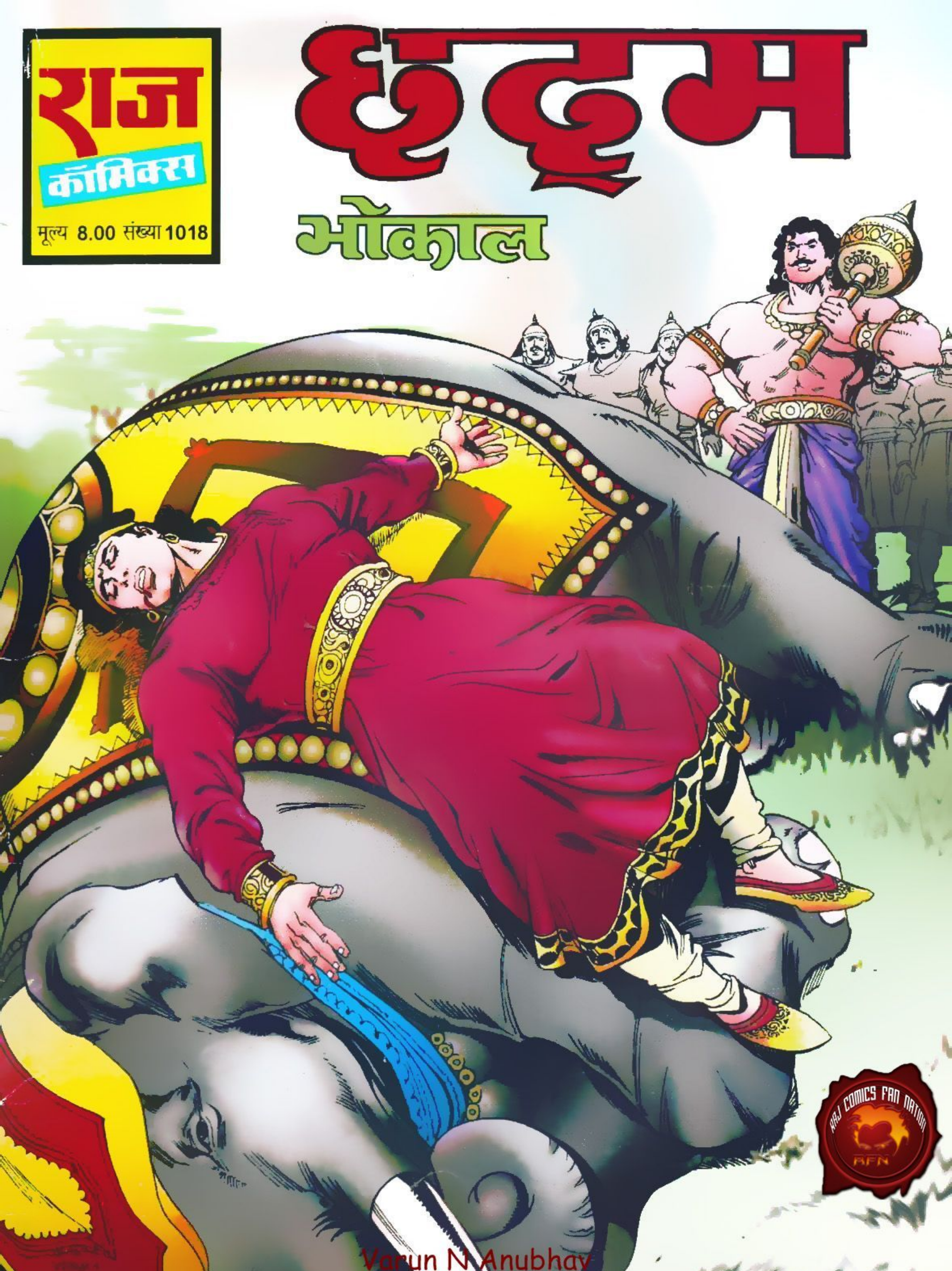

KRAJ COMICS FAN NATION
KFN

Varun N Anubhav

राज कॉमिक्स पेश करते हैं

इसी सैट के कॉमिक

- बटलर (डोगा का विशेषांक)
- तिलिस्मी जूते (बांकेलाल का विशेषांक)
- छद्म (भोकाल)
- शहीद (तिरंगा)
- शैतान का अवतार (इंस्पेक्टर स्टील)
- सिरफोड़ (गमराज)

आगामी सैट के कॉमिक

- ★जीरोजी (परमाणु शक्ति का टूइन वन विशेषांक)
- ★कौन है शक्तिमान (शक्तिमान का विशेषांक) (एक पोस्टर मुफ्त)
- भोकाल का काल (भोकाल)
- राष्ट्रद्रोही (तिरंगा)
- दुनिया मेरी जेब में (इंस्पेक्टर स्टील)
- गुण्डे चूहे (गमराज)

भी छप्पन रुपए मूल्य या अधिक की कॉमिक आप हमसे डाक द्वारा घर बैठे मंगाएं। साथ ही प्राप्त करें एक आकर्षक गिफ्ट। कृपया न रुपये या अधिक का मनीआर्डर **राजा पॉकेट बुक्स** 330/1 **बुराड़ी, दिल्ली**–110084 के पते पर भेजें। और अपनी मनपसंद ाकों के नाम मनीआर्डर फार्म के निचले हिस्से में अपने पूरे पते के साथ लिखकर भेजें।

भोकाल सीरीज के अत्यन्त सनसनीखेज कॉमिक

- अतिक्रूर
- भोकाल तिलिस्म में
- तिलिस्म टूट गया
- भोकाल और फूचांग
- अतिक्रूर और गजोख
- विकांडा
- सबसे बड़ा हत्यारा
- पीकू पकोड़िया
- तुरीन
- कपाला
- शूतान की शादी
- जहरघाटी
- तीन चुड़ैलें
- तन्त्रा
- चुड़ैल मां
- दिव्यास्त्र
- ★ डंकिनी
- ★ कपालिका
- ★ महायुद्ध
- ★ महारावण
- गुरुत्वा
- ★मृत्युसंकेत
- गुणीक
- फांसी दो भोकाल को
- ★ मोहरा
- ★ मात
- ★ चांडाल
- रणछोड़
- छद्म

■ इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य	8/-
✚ इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य	10/-
★ इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य	16/-
● इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य	25/-

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीनः
प्रकाशक : राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84 फोन: 7221410

दिल्ली में वितरक :
नागराज नावल्टीज, 313, दरीबा कलां, दिल्ली-6. फोन: 3278397
Varun N Anubhav

▫ लेखक:
संजय गुप्ता.
▫ संपादक:
मनीष गुप्ता.
▫ चित्रांकन:
कदम स्टुडियो.

ढुंढुम

मोक्षल सीरीज

सुख-समृद्धि मनुष्य को उसके परिश्रम से ही मिलती है। लेकिन उसे मिलने में आशीर्वाद दैवीय शक्ति का ही होता है। जिसे अलग-अलग प्रांत और राज्य में अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है। विकासनगर में इस शक्ति को कहां जाता है।...

...राजलक्ष्मी-

प्रचलित है कि जब से देवी राजलक्ष्मी की मूर्ति राज्य के भव्य मंदिर में स्थापित की गई है उसके प्रभाव से राज्य ने चहुंमुखी विकास किया है इसलिए...

जहां देवी राजलक्ष्मी की पूजा-अर्चना को देखने की जिम्मेदारी राजपरिवार की है-

वहीं उसकी सुरक्षा का दायित्व संभाला हुआ है सेनापति प्रवीन सिंह और महाबली भीकाल जैसे योद्धाओं ने-

©RAJA POCKET BOOKS

Varun N Anubhav

और उस समय तो इस दायित्व का भार सभी पर और भी अधिक बढ जाता है जब राजलक्ष्मी पर्व का आगमन होता है. इस पर्व से इक्कीस दिनों पूर्व तक देवी की मूर्ति का अभिषेक किया जाता है. और ठीक पर्व के दिन विकासनगर के सम्मानित व्यक्ति विश्व के कोने-कोने से इक्यावन नदियों का जल लाकर मूर्ति पर चढ़ाते हैं-

लेकिन इस बार ऐसा नहीं होना था क्योंकि...

देवी की प्रतिमा पर टिकी हुई थीं किसी की जलती हुई निगाहें--

रात्रि के दूसरे पहर देवी के भव्य मंन्दिर के चप्पे-चप्पे पर तैनात सुरक्षा कर्मी किसी के पदचापों की आवाज सुनकर चौंके से चौकन्ने नजर आने लगे-

ढक ढक ढक

सेनापति की कठोर आवाज ने उनकी तत्परता को और बढ़ा दिया-

सावधान! आने वाली कोई मुसीबत भी हो सकती है!

Varun N Anubhav

आने वाली मुसीबत नहीं राज्य की सर्वोच्च हस्ती थी-

महारानी! इतनी रात गये आप यहां ?

हमें देवी मां ने स्वप्न में दर्शन देकर कहा है कि "हमारी मूर्ति को आज रात्रि अपने शयन कक्ष में ही विश्राम कराएं"..

...इसलिए हम देवी की प्रतिमा को अपने कक्ष में ले जाने आ गये!

रानी मोहिनी ने आगे कदम बढ़ाया ही था कि ..

...रास्ता रोककर खड़ा हो गया सेनापति प्रवीन सिंह-

शत्रु हमारी राजलक्ष्मी को चुराकर हमारी सुख-समृद्धि छीनने के प्रयास में हैं, इसलिए आपका ही सख्त आदेश है कि भोर होने से पहले देवी की प्रतिमा तक पहुंचने का प्रयास करने वाले हर व्यक्ति को संदेह की दृष्टि से देखा जाये...

...और भोर होने में अभी काफी समय शेष है इसलिए आप भी तब तक प्रतिमा तक नहीं पहुंच सकती जब तक आप यह सिद्ध ना कर दिखायें कि आप महारानी ही हैं। उनके वेष में कोई शत्रु नहीं।

सेनापति!

क्रोध से गरजी रानी मोहिनी –

विनम्रता से और झुक गया प्रवीन सिंह -

क्षमा करें महारानी ! हम आपके आदेश का पालन करने के लिए विवश हैं।

दूसरे ही क्षण रानी मोहिनी के अधरों पर मुस्कान खेल गई -

हम तुम्हारी कार्य कुशलता से प्रसन्न हुए सेनापति !

बताओ हम कैसे सिद्ध करें कि हम रानी मोहिनी ही हैं ?

रानी मोहिनी के प्रश्न ने सेनापति प्रवीन सिंह को भी सोच में डाल दिया -

लेकिन शीघ्र ही सेनापति ने स्वयं को उस स्थिति से निकाला -

प्रसिद्ध है सम्पूर्ण विश्व में पलट संधान विधि को महारानी मोहिनी के अलावा और कोई नहीं जानता !

बहुत खूब ! हमारी पहचान की परीक्षा लेने का इससे अच्छा और कोई उपाय नहीं हो सकता सेनापति जी।

तीर-कमान मंगवाइये !

तीर कमान मंगाया गया जिसे रानी मोहिनी ने तुरन्त संभाला !

और उस विशेष बाण को प्रत्यंचा पर चढ़ाकर उसे पूरे वेग से खींचकर छोड़ दिया...

...सनसनाता तीर मन्दिर की दीवार में बने एक झरोखे में प्रवेश करके ओझल हो गया -

और एक क्षण बाद ही दूसरे झरोखे से बाहर निकल आया-

लेकिन अब उसकी नोक में वह पुष्प भी था जो देवी के हाथ में थमा था!

पुष्प के साथ ही तीर रानी मोहिनी के हाथ में पहुंच चुका था-

एक झटके के साथ रानी मोहिनी के सामने से हटा सेनापति-

आप जा सकती हैं महारानी!

धन्यवाद सेनापति!

मन्दिर के कपाट खोल दिये गये-

जिनसे छान से गुजरकर रानी मोहिनी देवी राजलक्ष्मी की प्रतिमा तक पहुंची-

Varun N Anubhav

और उसे उठाकर वापस लौट पड़ीं-

कोई रोकने वाला ना था-

कोई रोकने वाला ना था-

हर तरफ शान्ति थी -

लेकिन यह शान्ति भोर होते ही ऐसे भंग हुई जैसे कोई भयंकर ज्वालामुखी फूट गया हो!

क्षमा करें महारानी! मान्दिर में देवी प्रतिमा कहां से होगी। उसे तो आप रात्रि को अपने साथ ले गई थीं!

मैं देवी की प्रतिमा को ले गई...

... क्या बक रहे हो सेनापति?

सत्य यही है महारानी! रात्रि को आप ही मान्दिर से देवी की प्रतिमा उठाकर ले गई हैं, इसका प्रमाण हैं मैं और यहां उपस्थित सभी सैनिक तथा...

Varun N Anubhav

...पलट संधान विधि में प्रयोग होने वाला यह विशेष बाण जिसमें अभी भी देवी का हस्तपुष्प बिंधा हुआ है।...

...पूरी छानबीन और सन्तुष्टि करके ही मैंने आपको मन्दिर में प्रवेश करने दिया था।

यह झूठ है कल रात्रि हम अपने कक्ष से बाहर निकले ही नहीं तो फिर देवी की प्रतिमा हमने कैसे ली हो सकती है

कल रात्रि देवी की प्रतिमा आपके पास ही थी महारानी...

... और आप उसे लेकर रात्रि को ही ऋषि गुंद्रर के आश्रम में चली गई थीं!

रागेश्वरी त..तुम भी ऐसा कह रही हो जबकि तुम हर क्षण साये की तरह हमारे साथ रहती हो!

आप सही कह रही हैं महारानी कल रात्रि मी जब आप अपने कक्ष में सोई हुई थी मैं आप-के कक्ष के बाहर ही थी।...

"...परन्तु रात्रि के दूसरे पहर को जब मैं लघु शंका के लिए बाहर आई तो मैंने आपको प्रतिमा लेकर महल से बाहर जाते देखा।"

"मैं हैरान थी कि अभी तो मैं आपको आपके कक्ष में सोया छोड़कर आई, फिर आप इतनी जल्दी बाहर कैसे आ गईं..."

"...लेकिन उस समय आप महल से बाहर जा रही थी इसलिए मेरे पास सोचने-समझने का समय नहीं था, इसलिए मैं भी आपके पीछे-पीछे चल दी!..."

"शीघ्र ही आप प्रतिमा लेकर ऋषि सुंदर के आश्रम में जा पहुंचीं! आपके निजी कार्यों में दखल देना मेरे लिए बेअदबी होती इसलिए ना मैंने आपको रोका, ना टोका, बस आश्रम से बाहर बैठकर मैं आपके लौटने की प्रतीक्षा करने लगी-

"लेकिन आप ना आईं! आप दूसरे रास्ते से बाहर लौट गई होंगी, ऐसा सोचकर..."

...मैं भी वापस लौट आई!

जिसमें सभी राज दरबारियों के साथ रानी मोहिनी का मस्तिष्क भी बुरी तरह उलझा था!

रानी मोहिनी की विशेष दासी रागेश्वरी के कथन ने रहस्य को और भी गहरा कर दिया था-

महाबली भोकाल ने सभी को उस उलझन से बाहर निकाला-

देवी की प्रतिमा ऋषि गुंदूर के आश्रम में कैसे पहुंची? इस पर हम बाद में भी विचार कर सकते हैं। इस समय तो हमें प्रतिमा को वापस लाने का प्रबंध करना चाहिए ताकि...

...राजलक्ष्मी के पर्व पर हम उस पर जल चढ़ा सकें!

आपने ठीक कहा महाबली, मैं शीघ्र ही ऋषि गुंदूर के आश्रम में प्रतिमा को लेने जाता हूं!

सेनापति प्रवीनसिंह की एक टुकड़ी ने आश्रम की तरफ खाना होने में ज्यादा समय नहीं लगाया-

Varun N Anubhav

लेकिन फिर भी आश्रम पहुंचते-पहुंचते शाम हो गयी-

आश्रम सामने ही है रणवीर सिंह अपने साथियों से यहीं शिविर डालने के लिए बोल दो. मैं अकेला ही आश्रममें जाकर देवी की प्रतिमा वापस लाने का प्रयत्न करूंगा...

जो आज्ञा श्रीमान!

उप सेनापति को वहीं शिविर डालने को कहकर...

...जब सेनापति प्रवीन सिंह आश्रम में पहुंचा तो उसकी सभी आशाओं पर पानी फिर गया-

देवी राजलक्ष्मी की प्रतिमा एकदम उपयुक्त स्थान पर पहुंच गई है सेनापति, उसे ले जाने का विचार मस्तिष्क से निकाल दो!

...क्योंकि वर्षों पहले यह प्रतिमा इसी आश्रम की ही सम्पत्ति थी! इसकी उपस्थिति में ही खुशहाल था हमारा आश्रम...

"लेकिन एक दिन राजा विकासमोहन की सेवा से प्रसन्न होकर मेरे पति ऋषि गुंदूर ने देवी की प्रतिमा उसे उपहार स्वरूप दे दी:::-

:...मेरे लाख मना करने के पश्चात भी:::-

:::प्रतिमा के आश्रम से जाते ही आश्रम पर दुखों की बारिश सी होने लगी थी! मैं विधवा हुई:::

Varun N Anubhav

"...आश्रम में मानों महामारी फैल गई!..."

"...सारे आश्रमवासी दाने-दाने को मोहताज हो गये!.."

...तब मैंने निर्णय लिया कि देवी की प्रतिमा वापस आश्रम में आनी चाहिए!...

...अब यह आश्रम में ही रहेगी इसलिए...

...वापस लौट जाओ!

देवी की प्रतिमा का उपयुक्त स्थान कौन सा है इसका निर्णय राजदरबार में होगा महोदया! मैं तो उसे यहां से लेने आया हूं!...

...उचित यही रहेगा कि आप मेरा निवेदन स्वीकार कर लें...

Varun N Anubhav

...आपके पास कल सुबह तक का समय है!

ऋषि पत्नी गुरमुखी को अपने शब्दों में छिपी चेतावनी देकर आश्रम से निकला सेनापति प्रवीन सिंह

क्या जानता था कि कल सुबह तो स्थिति उनके हाथों से निकल जाने वाली थी–

सेनापति हमें कड़े शब्दों में चेतावनी देकर गया है तो क्या देवी राजलक्ष्मी की प्रतिमा एक बार फिर हमसे छिनकर राजमहल पहुंच जायेगी?

नहीं देवी राजलक्ष्मी इतने वर्षों बाद एक बार फिर अपने वास्तविक स्थान पर आ पहुंची है!...

...अब उसे कोई भी यहां से नहीं ले जा सकता गुरूमाता!...

...अपने शिष्य छद्म पर भरोसा रखिये!

गजब का आत्मविश्वास झलक रहा था छद्म नामक उस शख्स की आंखों में-

वह रात्रि का तीसरा पहर था जब सेना-पति प्रवीन सिंह हड़बड़ा कर अपने बिस्तर से उठा-

कौन है?

मैं उपसेनापति रणबीर सिंह!

आओ रणबीर सिंह! इतनी रात गये मेरे पास कैसे आना हुआ?

तुम्हारे होश फाख्ता करने के लिए।

भड़ाक

आंखों में आश्चर्य लेकर बेहोशी के समुद्र में डूबता चला गया वह-

रात के अंधेरे में क्या हुआ, किसी को कुछ पता नहीं चला!

Varun N Anubhav

सुबह सब कुछ सामान्य था-

उपसेनापति जी नहीं दिख रहे सेनापति जी?

मैंने उन्हें रात्रि को ही किसी विशेष कार्य से राजधानी भेज दिया है। तुम अपनी तैयारी करो!

हमारे लिए क्या आदेश है सेनापति जी?

सभी पूरी तरह तैयार हो जायें और आश्रम के चारों तरफ फैलकर उसकी रखवाली व चौकसी करें।

ध्यान रहे परिन्दा भी तुम्हारी निगाहों से बचकर आश्रम के अन्दर ना पहुंच पाये!

परन्तु सेनापति जी रात्रि में तो आपने आश्रम पर आक्रमण करने की रणनीति बनाई थी फिर यह चौकसी?

सैनिक की बात पूरी होने से पहले ही...

...सिंह सा गरज उठा प्रवीन सिंह-

सेनापति मैं हूं इसलिए मुझे तय करना है कि मैं आश्रम पर आक्रमण करूं या उसकी चौकसी। तुम बस वह करो जैसा तुम्हें आदेश मिलता है। समझे!

ज-ज जी सेनापति जी!

सभी सैनिकों के प्रश्न उनके मस्तिष्कों में ही दबकर रह गये-

Varun N Anubhav

उन्होंने वही किया जो उनके सेनापति का आदेश था-

आश्रम को नष्ट करने का इरादा लेकर आये सैनिक अब उसके रक्षक बने खड़े थे-

जबकि इधर राजमहल में-

सेनापति जी अभी तक देवी की प्रतिमा लेकर वापस नहीं लौटे !

वहां की स्थिति हमारी सोच से अधिक गंभीर लगती है। तुम स्वयं सेना की एक टुकड़ी के साथ वहां जाओ भोकाल !

हो सकता है उन्हें सहायता की आवश्यकता हो।

ठीक है महारानी ! मैं अभी कूच करता हूं।

भोकाल सेना की टुकड़ी के साथ आश्रम पहुंचा तो दंग रह गया -

ये क्या, सेनापति तो सैनिकों के साथ आश्रम की रखवाली कर रहे हैं।...

...क्या माजरा है ?

इधर माजरा समझने के लिए सैनिकों के साथ आगे बढ़ा भोकाल -

Varun N Anubhav

इधर पूरी शक्ति से चीखा सेनापति-

आक्रमण!

सभी स्तब्ध रह गये-

सेनापति ने अपने साथियों को हम पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया है।...

... क्या हुआ है उन्हें?

विकासनगर की एक सेना टुकड़ी दूसरी टुकड़ी को खत्म करने का इरादा लेकर तेजी से आगे बढ़ रही थी-

और शायद वह अपने उद्देश्य में सफल भी हो जाती-

अगर अपनी पूरी शक्ति से चीख ना पड़ता भोकाल -

रुक जाओ!

कहानी 19 पेज से जारी

Varun N Anubhav

... किसके आदेश पर तुम एक दूसरे के लहू से धरा को रक्तरंजित करने पर तुले हो!

सेना सेनापति के आदेश का पालन करती है भोकाल...

...इसलिये इन्हें मैंने, सेनापति प्रवीन सिंह ने आदेश दिया है कि इस आश्रम की तरफ जो भी निगाहें उठे उसे फोड़ डालो!

हतप्रभ भोकाल चीख उठा-

सेनापति! तुम अपने होश तो नहीं खो बैठे हो?

मैंने होश नहीं खोये हैं भोकाल, लेकिन अगर तुम इन सैनिकों के साथ तुरन्त ही वापस नहीं लौट गये तो...

...तुम्हें अपना जीवन खोना पड़ सकता है!

सेनापति!

अब ना सह सका भोकाल-

Varun N Anubhav

त्योंरियां चढ़ गईं उसकी, बांहें फड़क उठीं-

देवी की प्रतिमा रखने वालों का तुम साथ क्यों दे रहे हो ये तो मुझे पता नहीं, लेकिन तुम जो कर रहे हो वह राजद्रोह है और राजद्रोह करने वाला भोकाल का शत्रु होता है!

मुझसे शत्रुता तुम्हें बहुत महंगी पड़ेगी भोकाल!

भोकाल भी पीछे ना रहा-

अपनी और मेरी शक्ति की अगर तुम तलवार के तराजू में ही तौलना चाहते हो तो मुझे यह स्वीकार है।

यह स्वीकार है तो...

... तुम्हें मेरे हाथों मृत्यु भी स्वीकार करनी होगी!

टनाक

पहला प्रहार करके प्रवीन सिंह ने उस लड़ाई का आरम्भ कर दिया था।..

Varun N Anubhav

...जिसका अंत पता नहीं किसके अन्त के साथ होना था क्योंकि -

अगर प्रवीन सिंह तलवार का धनी था...

...तो तलवारबाज़ी की हर कला की दौलत से मालामाल था भोकाल...

...भोकाल अगर महाबली थां तो...

...विश्व के अपराजित राज्य का सेनापति प्रवीन सिंह भी था!

भोकाल ने अगर राष्ट्रनायक की उपाधि प्राप्त की तो-

...प्रवीन सिंह भी सेनानायक के पद पर आसीन था।

मुकाबला हर कोण से बराबरी का था।

Varun N Anubhav

और बराबरी के मुकाबले के परिणाम ना जल्दी निकलते हैं और ना आसानी से-

टनाक

लेकिन इस लड़ाई का परिणाम निकालने के लिए सेनापति बुरी तरह आतुर था-

जानता है मोकाल, ईश्वर ने हम दोनों के हाथों से तलवार क्यों छुड़ा दी क्योंकि वह चाहता है कि...

...मैं तुम्हें तलवार से नहीं!...

...सप्त बाण विद्या का सन्धान करके बाणों से मारूं!

एक ही कमान पर एक साथ सात तीर चढ़ाकर प्रवीन सिंह ने सन्धान किया था धनुर्विद्या की उस विलक्षण कला का...

...जिसका नाम सप्तबाण संधान था!

धनुर्विद्या की एक घातक कला सप्तबाण संधान। जिसका एक ही तोड़ था...

...सिर्फ सप्तबाण संधान-

सर्रर्र

ओह! मैं तो भूल ही गया था कि अपनी पत्नी की वजह से तू भी सप्त बाण संधान विधि जानता है!

★ सप्त बाण संधान के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: पूर्व प्रकाशित कॉमिक **लक्ष्य**

Varun N Anubhav

लेकिन ये बात मैं ताल ठोक-कर कह सकता हूं कि अब मैं धनुर्विद्या की जिस कला का प्रदर्शन करने जा रहा हूं उसे विश्व में सिर्फ और सिर्फ मैं जानता हूं और उस कला का नाम है...

... चौदह बाण सन्धान विधि!

धनुर्विद्या की सबसे घातक, विलक्षण और अचूक कला जिसके वार का ना कोई तोड़ है और ना ही बचाव। जिस पर भी मैंने इस कला का प्रदर्शन किया वह मरा ही मरा!

जैसे अब तू मरेगा। हा हा हा!

वहशी की भांति ठहाका लगाते हुए प्रवीन सिंह ने अपने कमान से चौदह तीर छोड़ दिये-

और हर तीर का निशाना मोकाल था-

ओफ्फ! इस कला का सचमुच कोई तोड़ नहीं! मैं सप्तबाण संधान करके...

"...उनमें से सात तीरों को तो रोक सकता हूं लेकिन-"

"बाकी बचे सात तीरों का मेरे पास कोई हल नहीं"-

Varun N Anubhav

सात तीरों का भोकाल के पास कोई हल नहीं था-

और जिस चीज का हल नहीं होतो वह जानलेवा ही साबित होती हैभोकाल के लिए भीवे बाण जानलेवा सिद्ध होने जा रहे थे!

और उन बाणों ने भोकाल की जान ले भी ली होती अगर वह सैनिक अपनी जान देने बीच में नहीं आ जाता तो-

खच्च
खच्च
आऽहह
खच्च

नीचे गिरने से पहले ही भोकाल ने अपनी बांहों में संभाल लिया उसे-

ये तुमने क्या किया? मुझे बचाने के लिए अपने प्राणों की भेंट चढा दी!

सारे राष्ट्र के प्राणों के रक्षक महाबली भोकाल के प्राण बचाने का एक सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ था...

...ऐसे अवसर को भला मैं अपने हाथों से कैसे जाने देता आहह!...

...अब अपना ध्यान मेरी तरफ से हटाइये महाबली और सेनापतिजी को संभालिए...

वे आप को मारने के लिए एक बार फिर चौदह बाणोंका संधान करने जा रहे हैंआहह!

अब प्रवीन सिंह चौदह बाणों का संधान करे या सौ बाणों का लेकिन...

Varun N Anubhav

...अब वह मौकाल के प्रकोप से नहीं बच सकता!...

कश्क क

धाड

...क्योंकि अगर ऐसा हो गया तो व्यर्थ हो जायेगा एक बलिदानी का बलिदान!

ओह

धड़ाम

जिनसे प्रवीन सिंह ना संभल पाया और ना उन्हें सह पाया-

...और अपने दुष्कार्यों में सफल हो जाएगा एक राष्ट्रद्रोही!

धड़ाक

गजब की फुर्ती, जबरदस्त मारक क्षमता और भीषण क्रोध मरा हुआ था मौकाल के उनवारों में-

पांव उखड़ गये उसके-

Varun N Anubhav

सिर पर पैर रखकर भाग खड़ा हुआ वह–

एक कायर. भागता कहां है?

भोकाल ने ललकारा, लेकिन उसके क्रोध का सामना करने के लिए वह ना रुका –

आश्रम में घुसकर समी की आंखों से ओझल हो गया वह–

आश्रम का आंचल उसे भोकाल के प्रकोप से ज्यादा समय तक नहीं बचा पायेगा!

लेकिन सोचने वाली बात यह है कि आखिर सेनापति को हुआ क्या है?

वह आश्रम वासियों का साथ क्यों दे रहा है?

आपके प्रश्नों का उत्तर यहां मौजूद है महाबली!

आवाज सुनकर भोकाल चौंका, पलटा तो...

...उसकी आंखों के सामने मानों सारा अन्तरिक्ष घूम गया–

ओह नहीं! सेनापति प्रवीन सिंह!

ये शिविर से कुछ ही दूर झाड़ियों में बंधे पड़े थे!

Varun N Anubhav

उपसेनापति की भी दशा सेनापति जी जैसी है

दोनों अचेत हैं!

इन्हें होश में लाओ!

क्या रहस्य है ये, शायद इनके होश में आने के बाद इसका कुछ पता चल सके।

सेनापति के होश में आने के बाद रहस्य और भी गहरा हो गया –

उपसेनापति रणबीर सिंह मेरे पास आये थे। मैं पूरी तरह असावधान था। उसी का लाभ उठाकर वे मुझे अचेत करने में सफल हो गये!

लेकिन इन्होंने मुझे अचेत क्यों किया?

मोकाल ने बताया तो सन्न रह गया प्रवीन सिंह –

यह क्या कह रहे हो महाबली? मैं आश्रम की सुरक्षा कर रहा था? पर मैं तो अचेत पड़ा था!

असंभव! असंभव!

अचेत तो उपसेनापति भी थे सेनापति! तो उन्होंने तुम पर हमला कैसे किया?

बात तो असंभव ही है सेनापति, लेकिन सत्य यही है!

एक बार देवी की प्रतिमा हासिल करलो महाबली ! फिर उस रहस्य के बारे में भी जान लेंगे

सही कहा इस समय देवी की प्रतिमा प्राप्त करना हमारा मुख्य लक्ष्य है !...

...मैं अभी उसे आश्रम से लेकर आता हूं !

भोकाल ने आश्रम की तरफ कदम बढ़ा दिये-

लेकिन आश्रम के मुख्य द्वार तक पहुंचने के बाद उस प्रहार के कारण उसके कदम जमीन से उखड़ गये...

भड़ाक

...वार की भीषणता का तिनके की तरह हवा में उड़ते भोकाल के शरीर...

भड़ाक

चियांऽऽ

आहह

Varun N Anubhav

...और उसकी हालत देखकर आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता था-

पहचानो, तुम्हारे महाबली को एक ही मुष्टि प्रहार में परास्त करने वाला मैं कौन हूं!

भीम!

ब्रह्माण्ड का सबसे अधिक शक्तिशाली पाण्डु पुत्र भीम!

कमशः

सभी फटी-फटी आंखों से उस भीम को देख रहे थे जो द्वापर युग से इस युग में आया था बनकर...

... मोकाल का काल

सभी रहस्यों के द्वार खोलता हुआ मोकाल सीरीज का रोमांचक कॉमिक!

SUMA KASH